डा. व्यंकटेश वामन कोटबागे
एम.ए.पीएच.डी.
रीडर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं डा. व्यंकटेश वामन कोटबागे, यह प्रमाणित करता हूँ कि, **श्री. रमेश उध्दव चव्हाण** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध **''भीष्म साहनी के नाटकों में यथार्थ और मनोविज्ञान'' ('हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' के संदर्भ में)** मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक किया है। इसमें प्रस्तुत तथ्य मेरी जानकारी के अनुसार सही है। **मैं श्री. रमेश उध्दव चव्हाण** के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

V.V. Kotabage

स्थल - वाई
दिनांक : 26/6/2003

डा. व्यंकटेश वामन कोटबागे
निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि , **श्री. रमेश उध्दव चव्हाण** का एम.फिल. (हिंदी) का लघु-शोध-प्रबंध **''भीष्म साहनी के नाटकों में यथार्थ और मनोविज्ञान'' ('हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' के संदर्भ में)** परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
हिंदी विभाग
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा (महाराष्ट्र)

प्राचार्य आर. जी. चव्हाण
प्राचार्य
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा (महाराष्ट्र)

प्रख्यापन

मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे संशोधन का विषय **''भीष्म साहनी के नाटकों में यथार्थ और मनोविज्ञान'' ('हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' के संदर्भ में)** सर्वथा मौलिक है। इसके प्रस्तुतीकरण के पहले इस या अन्य विश्वविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थल - सातारा

दिनांक - 26/6/2003

श्री. रमेश उध्दव चव्हाण

शोध-छात्र

भूमिका

साहित्य की अनेक विधाएँ है, उनमें नाटक विधा महत्वपूर्ण है। नाटक साहित्य मानव जीवन के सबसे जादा समीप होता है। मानव के विचार मानव के द्वारा अभिव्यक्त करने का नाटक एक माध्यम है। व्यक्ति के जीवन का दूसरा रुप ही नाटक है। नाटक यथार्थ के बहुत निकट होता है।

भीष्म साहनी जी स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के प्रगतिशील साहित्यिक है। भीष्म जी के कथा के केंद्र में निम्न वर्ग और मध्य वर्ग की परेशानियाँ रही है। आपका साहित्य सामन्तवाद और पूँजीवाद, वर्ग और वर्ण का विरोध करता है। आप सच्चे अर्थों में मार्क्सवादी दृष्टि से मानव जीवन की जटिलता को खोलते हैं। आप प्रगतिशील लेखक होने के कारण आपके साहित्य ने मुझे अधिक प्रभावित किया। आपने अपने साहित्य में समाज में स्थित रूढियाँ, अन्धविश्वास और धार्मिक कुरीतियों का विरोध किया है। इसिके 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' ये दोनो नाटक परिचायक है। मैंने आपके इन्ही नाट्य-साहित्य में यथार्थता और पात्रों की मनोवैज्ञानिकता के नये आयामों को खोजने का प्रयत्न किया है।

मैंने यह लघु-शोध-प्रबंध मेरे गुरूवर्य श्रीयुत डॉ. व्यंकटेश वामन कोटबागे की प्रेरणा और सुयोग्य मार्गदर्शन में पूरा किया है। मैं उनका हृदय से ऋणी हूँ। डॉ. अर्जुन चव्हाण, हिन्दी विभाग-अध्यक्ष, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, प्रा. श्री. जयवंत जाधव, अध्यक्ष हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, खान मॅडम, छ. शिवाजी महाविद्यालय, सातारा इन सभी का मैं आभारी हूँ, जिनकी मुझे हमेशा सहायता रही है। अध्ययन में किताबों की मदद करनेवाले श्री. एल. एन. कुंभार, ग्रंथपाल, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा तथा उनके सहयोगी कर्मचारीयों का भी मैं ऋणी हूँ। मैं विशेष रूप से प्राचार्य आर. जी. चव्हाण, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा इनका भी आभारी हूँ,

जिन्होंने मुझे उच्च-शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। मैं उन विद्वान लेखकों और समीक्षकों का कृतज्ञ हूँ, जिनकी किताबों की मुझे यह लघु-शोध-प्रबंध तैयार करने में सहाय्यता मिली।

मैं मेरे आदरणीय पिताजी श्री. उध्दव चव्हाण और माताजी सौ. मालन चव्हाण इनका अत्यंत ऋणी हूँ, उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से मैं यहाँ तक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सका। मेरे इस शोधकार्य को अधिक प्रोत्साहित करनेवाले मेरे बडे भाई चंद्रकांत और भाभी सौ.दैवशाली जी का भी ऋणी हूँ, जिन्होंने इस शोधकार्य में मेरी मदद की है। इसके अलावा मैं मेरे शिवतेज माध्यमिक विद्यालय, आरे, सातारा के प्रधानाध्यापक और सभी सहकारी अध्यापकों का आभारी हूँ, उनकी प्रेरणा से मैं यह शोध-कार्य पूरा कर पाया हूँ।

इसके अतिरिक्त श्री.सुभाष चव्हाण, सुश्री सुषमा मसणे, श्री.धनंजय गायकवाड आदि अध्यापक और श्री.अजय फरांदे, श्री.संजय येवले, श्री.राजेश पवार आदि मेरे सहकारीयों ने इस शोध कार्य में मेरी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप में सहायता की है। इन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

अंत में मैं यह लघु-शोध-प्रबंध टंकीत करनेवाले 'मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा' के श्री.मुकुंद ढवळेजी और उनके सहकारी श्री.कुलकर्णी जी का कृतज्ञ हूँ।

चव्हाण

सातारा

श्री. रमेश उध्दव चव्हाण

दिनांक : 26/6/2003

अनुक्रमणिका

''भीष्म साहनी के नाटकों में यथार्थ और मनोविज्ञान''

('हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' के संदर्भ में)

अध्याय क्रं.		अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
अध्याय 1	:-	भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और कृतित्व ।	1 - 41
अध्याय 2	:-	'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' की वस्तु।	42 - 83
अध्याय 3	:-	'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' की यथार्थता ।	84 - 114
अध्याय 4	:-	'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' की मनोवैज्ञानिकता ।	115 - 138
अध्याय 5	:-	उपसंहार ।	139 - 150
		संदर्भ ग्रंथ सूची	151 - 152

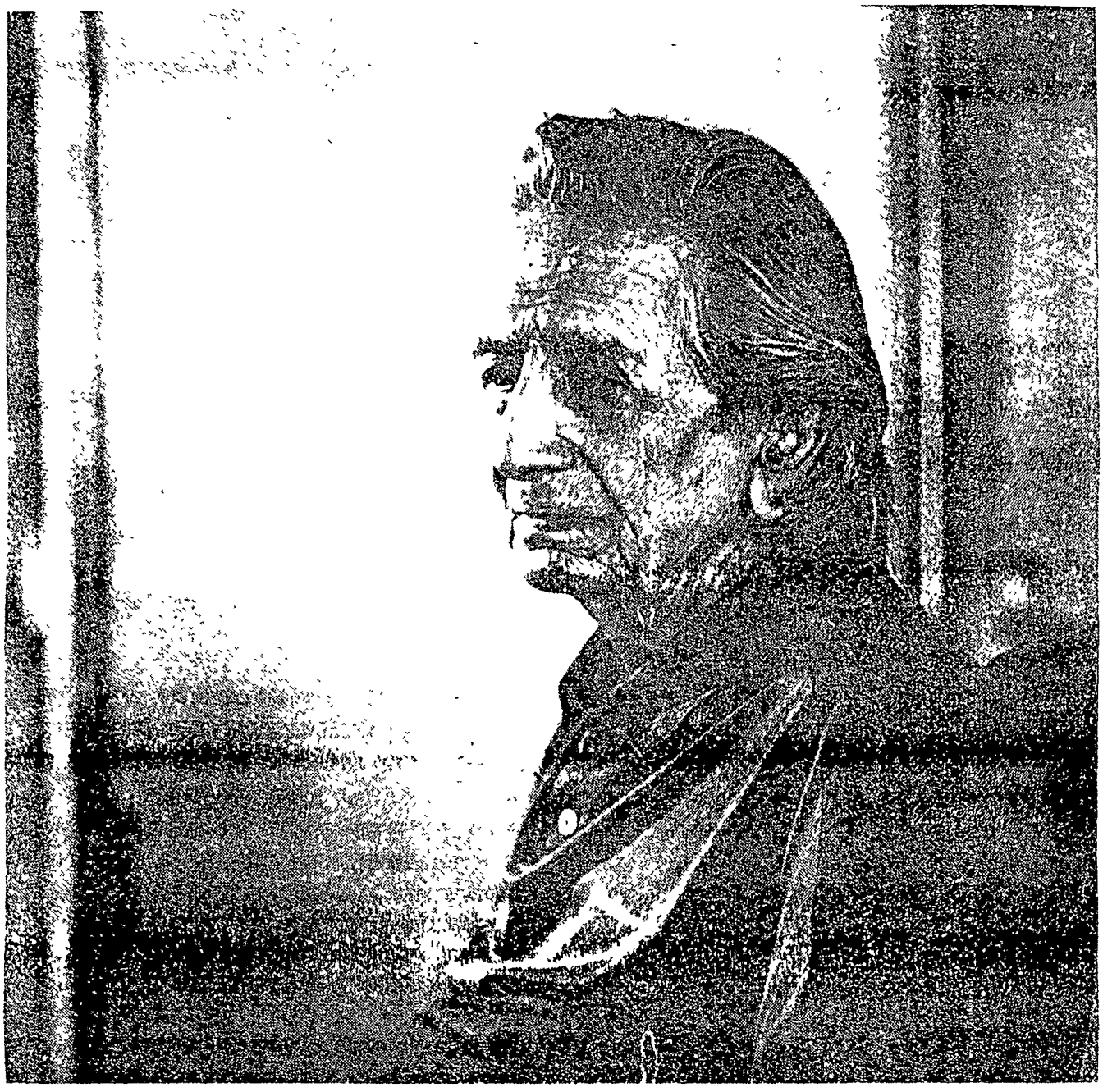

'भीष्म साहनी'

'अनुराधा' दिवाळी अंक 2002